Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

हिंदी एवं नेपाली कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदना

(2001-2020 तक के चयनित कहानियों में संवेदना के संदर्भ में)

मोहन महतो
शोधार्थी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी

शोध सार :

धार्मिक संवेदना किसी भी व्यक्ति या समाज की आस्था, परंपरा और धार्मिक विश्वासों के प्रति उसकी भावना को दर्शाती है। यह सहिष्णुता, सम्मान, नैतिकता और समाज में शांति स्थापित करने में सहायक होती है। हालांकि, जब इसे कट्टरता, असहिष्णुता और सांप्रदायिकता से जोड़ दिया जाता है, तो यह सामाजिक संघर्ष का कारण भी बन सकती है। इसलिए धार्मिक संवेदना का संतुलित और उदार दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। धार्मिक संवेदना के प्रमुख पहलू हैं -आस्था और विश्वास, धार्मिक मूल्यों की रक्षा, धार्मिक सहिष्णुता और सौहार्द, धार्मिक आस्थाओं पर चोट का अनुभव, धर्म और समाज के बीच संबंध। साहित्य में धार्मिक संवेदना का उपयोग पौराणिक कथाओं भक्ति साहित्य नैतिक शिक्षाओं और धर्म से जुड़े सामाजिक मुद्दों के चित्रण में किया जाता है । तुलसीदास के रामचरितमानस, कबीर और सूरदास की रचनाएं धार्मिक संवेदना से भरपूर है। आधुनिक साहित्य में प्रेमचंद से लेकर अखिलेश, संजीव, मनोज रुपाड़ा, मधु कांकरिया, अनामिका, गीतांजलि श्री जैसे साहित्यकारों ने धार्मिक संवेदना को नए दृष्टिकोण से देखा है। समाज में धार्मिक संवेदना लोगों के आचरण, रीति- रिवाज और सामूहिक जीवन को प्रभावित करती हैं। यह सामाजिक नैतिकता दान, सेवा और भाईचारे की भावना को जन्म देती है।

बीज शब्द : : बाजारवाद, स्वार्थपरता, भोगवादिता, संकुचित मनोवृत्ति, सर्वोत्कृष्ट, साम्य-वैषम्य, रागात्मक संबंध, भंगिमा, प्रस्फुटित, व्युत्पत्तिपरक

मूल आलेख:

वर्तमान समय में धार्मिक संवेदना का स्वरूप बहुआयामी और जटिल हो गया है। यह केवल व्यक्तिगत आस्था और आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज, राजनीति, मीडिया और वैश्विक घटनाओं से भी प्रभावित हो रही हैं। आधुनिक युग में धार्मिक संवेदना का स्वरूप को कई बिंदुओं ने प्रभावित किया है, जैसे -धार्मिक सहिष्णुता और बहुलतावाद, धार्मिक कट्टरता और सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता और आधुनिकता, धार्मिक संवेदना और राजनीति, धार्मिक संवेदना और मीडिया, वैश्विक परिदृश्य में धार्मिक संवेदना आदि । वर्तमान समय में धार्मिक संवेदना का स्वरूप जटिल और विरोधाभासी है, एक और यह सहिष्णुता, आध्यात्मिकता और मानवता को बढ़ावा देती है वहीं दूसरी ओर कट्टरता और राजनीतिक स्वार्थ से प्रभावित भी होती है। डिजिटल युग में धार्मिक संवेदना की अभिव्यक्ति के नए माध्यम बने हैं, लेकिन इसके दुरुपयोग के खतरे भी बड़े हैं, इसलिए धार्मिक संवेदना को सकारात्मक और प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है ताकि यह समाज में शांति, सहयोग और सद्भावना को बढ़ावा दे सके।

आज धर्म के नाम पर अत्याचारों में वृद्धि हो रही है। मानव के हृदय से प्रेम उदारता सहानुभूति जैसी भावनाएं लुप्त होती जा रही हैं। नैतिकता और मानवता मानो बीती बातें हो चुकी है। इसका कारण यह है कि लोगों में धार्मिक संवेदना नहीं रही है। धर्म मनुष्य के क्रियाकलापों का क्षेत्र विस्तृत कर उन्हें भौतिक स्वार्थ से ऊपर उठाकर सोचने के लिए विवश करता है। इस भावना का विकास धार्मिक संवेदना द्वारा ही संभव है। यह भावना पुरुष-नारी, अमीर-गरीब सभी में एक समान होती है। धर्म द्वारा व्यक्ति को आत्मज्ञान होता है, जिसमें वह दूसरों को अच्छी तरह समझकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में बढ़ावा देता है। अतः धर्म समाज में सामंजस्य के भाव जागृत कर उसके जीवन को आदर्श बनता है और ऐसा तभी हो सकता है जब हम एक दूसरे के धर्म की निंदा ना करें सभी धर्म को एक समान समझे और किसी धर्म विशेष को किसी पर जबरदस्ती न थोपे धार्मिक संवेदना ने नारी जीवन एवं उनके विचारों और सोच को भी नई दिशा देकर प्राचीन परंपराओं की जगह नई परंपरा स्थापित की है । प्रत्येक धर्म को उच्च बनाने धर्मनिरपेक्षता के लिए जो प्रयत्न किया जाता है वही धार्मिक संवेदना है।

अखिलेश एवं असित राई

अखिलेश समकालीन हिंदी कथाकरो में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनकी कहानी भारतीय समाज की जटिलताओं धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं सामाजिक संरचना और मानव जीवन के संघर्षों को प्रखर रूप में प्रस्तुत करती है। 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में उनकी कहानी धार्मिक आस्था सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं राजनीतिक प्रभाव और समाज में हो रहे बदलावों को गहराई से विश्लेषित करती है। अखिलेश की कहानी धार्मिक आस्था को केवल श्रद्धा या विश्वास तक सीमित नहीं रखती, बल्कि इसे समाज की संरचना, सत्ता और राजनीति के साथ जोड़कर प्रस्तुत भी करती हैं। वह धर्म को एक सामाजिक शक्ति के रूप में देखते हैं, जो कभी एकजुट करता है तो कभी विभाजन का कारण बनता है।

अखिलेश की कहानी 'शाप ग्रस्त' धार्मिक मान्यताओं सामाजिक संरचना और व्यक्ति के जीवन पर धर्म के प्रभाव को उजागर करती है इस कहानी में दिखाया गया है कि कैसे धर्म के नाम पर कुछ लोग हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं और कैसे सामाजिक संरचना धार्मिक मान्यताओं को अपने हितों के लिए उपयोग करती है। कहानी पाठक को यह सोचने पर मजबूर करती है कि धर्म का सही उद्देश्य क्या होना चाहिए- मानवता की सेवा या सामाजिक विभाजन? रचनाकार ने बार-बार यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज में धर्म के नाम पर किस तरह अंधविश्वास फैलाया जाता है। गांव का बुजुर्ग कहता है: " यह शाप ग्रस्त है, इसके पास रहोगे तो तुम्हारा भी सर्वनाश हो जाएगा।"[1] महिला कहती है: "भगवान ने शाप दिया है इसका भाग्य ही खराब है इससे दूर ही रहना अच्छा होगा।"[2] यहां तक की पुजारी भी कहता है:" शास्त्रों में लिखा है शाप से ग्रसित व्यक्ति से संबंध रखने वाला भी पापी होता है।"[3] इन संवादों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि कैसे धार्मिक आस्थाएं व्यक्ति को समाज से अलग कर सकती है।

अखिलेश की कहानी 'वंशज' समकालीन हिंदी साहित्य में धार्मिक और सांस्कृतिक संरचना को गहराई से विश्लेषित करने वाली महत्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं सामाजिक पदानुक्रम और आधुनिक चेतना के बीच द्वंद्व को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती है। कहानी यह दिखाती है कि कैसे धर्म व्यक्ति

की सामाजिक पहचान तय करने का एक महत्वपूर्ण कारक होता है। धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं के कारण किसी व्यक्ति का सामाजिक दर्जा निर्धारित होता है। उदाहरण स्वरूप मुख्य पात्र को 'वंशज' होने के कारण एक विशिष्ट धार्मिक और सामाजिक पहचान दी जाती है जिससे वह निभाने के लिए बाध्य है। कहानी में कई ऐसे संवाद है जो यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार धर्म किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और कर्तव्य का निर्धारण करता है उदाहरण स्वरूप बुजुर्ग कहता है: "तुम हमारे वंश के हो तुम्हें धर्म और परंपरा का पालन करना ही होगा।"[4] साथ ही गांव का मुखिया भी कहता है:" वंशज होने का अर्थ केवल अधिकार नहीं बल्कि धर्म निभाने की जिम्मेदारी भी है।"[5] यह संवाद दिखाते हैं की धार्मिक कर्तव्य व्यक्ति की इच्छाओं पर हावी हो सकती हैं। लेकिन नई पीढ़ी इस चुनौती को देने की कोशिश कर रही है।

'वंशज' कहानी में सांस्कृतिक परंपराओं को एक उत्तरदायित्व के रूप में दिखाया गया है। बुजुर्ग पात्र कहता है:" हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि वंश का नाम बनाए रखना सबसे बड़ा धर्म है ।"[6] यह संवाद एक सवाल खड़ा करती है क्या परंपराओं को केवल इसलिए निभाया जाना चाहिए क्योंकि वह सदियों से चली आ रही है?

वंशज कहानी में धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदना को संवादों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। धर्म को एक सामाजिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित करता है, जबकि संस्कृति को एक विरासत के रूप में देखा गया है, जिससे निभाने की अपेक्षा समाज करता है। कहानी यह दिखाती है कि कैसे नहीं पीढ़ी पुरानी मान्यताओं को चुनौती देते हुए अपने स्वतंत्र पहचान की खोज करती है।

अखिलेश की कहानी 'शहर' धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के संदर्भ में व्यक्ति और समाज के संघर्ष को उजागर करती है। यह कहानी आधुनिक शहरी जीवन में धर्म और संस्कृति के बदलते स्वरूप को दिखाती हैं और यह प्रश्न उठाती है क्या धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं समय के साथ बदल सकती है या अपरिवर्तित रहती है। कहानी दर्शाती है कि कैसे शहर में धार्मिक मान्यताएं धीरे-धीरे बदल रही है और लोग पारंपरिक आस्थाओं से दूर हो रहे हैं:" इस शहर में मंदिर तो बहुत है पर उसमें अब पहले जैसी श्रद्धा नहीं दिखती लोग आते हैं लेकिन मन कहीं और होता है.... पहले गांव में हर पर्व का अलग-अलग महत्व था, लेकिन यहां त्योहारों में भी बस दिखावा रह गया है।"[7] यह कथन दर्शाते हैं कि शहरों में धार्मिकता अधिक व्यक्तिगत और सतही होती जा रही है जबकि गांव में एक सामूहिक अनुभव के रूप में मौजूद रहती थी।

शहरीकरण ने कैसे धार्मिक मान्यताओं में बदलाव कर दिया उसे भी कहानीकार ने दर्शाया है:" गांव में जब सूरज नहीं निकलता था, मंदिर की घंटियां सुनाई देती थी पर इस शहर में सुबह मोबाइल की घंटी पहले बजती है ।"[8] इस प्रकार यह कहानी पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या आधुनिकता के साथ परंपराओं का बदलाव स्वाभाविक है या हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने का प्रयास करना चाहिए।

असित राई नेपाली साहित्य के एक प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने 21वीं सदी के दूसरे दशक में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी कहानी समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं को गहराई से उकेरती है । उन्होंने

धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं के प्रभाव को अपनी कहानियों में विभिन्न रंगों के माध्यम से दर्शाया है । उनकी कहानी 'जीवन रेखा' में धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदना प्रमुख रूप से उबड़कर आती है इस कहानी में नेपाली समाज की धार्मिक आस्थाएं, सांस्कृतिक परंपराएं और मानवीय मूल्यों को प्रभावित ढंग से चित्रित किया गया है । कहानी में पात्रों के माध्यम से सामाजिक मूल्य,धार्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा को अभिव्यक्त किया गया है। (आमा र सुमनबीचको संवाद)

आमा: "बाबु, भगवान्ले जति दुःख दिन्छन्, उति नै सहने शक्ति पनि दिन्छन्।"

सुमन: (निराश हुँदै) "तर आमा, कहिलेकाहीं लाग्छ भगवान् छन् नै कि छैनन्?"

आमा: "छोराले यो कसरी भन्छ? विश्वास नै जीवनको आधार हो।"[9]

इन पंक्तियों में धार्मिक आस्था एवं सुमन के द्वन्द को स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार असित राय की कहानी नेपाली समाज की धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का सजीव चित्रण करती हैं। वह पत्रों के माध्यम से पूजा- पाठ व्रत त्योहार और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन करते हैं, जिसमें समाज की धार्मिक संवेदनाएं प्रकट होती है। उनकी रचनाओं में नेपाली समाज के सांस्कृतिक रीति रिवाज जैसे विवाह व्रत- त्यौहार पारिवारिक संबंध और सामाजिक संरचना का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह समाज की सांस्कृतिक धरोहर और लोकाचार को उजागर करता है । उनके कुछ कहानियां आधुनिकता और परंपरा के बीच के संघर्ष को भी उजागर करती हैं, जहां पात्र नई सोच और पुरानी मान्यताओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं। यह समाज में हो रहे सांस्कृतिक परिवर्तन और उसके प्रभावों को दर्शाता है ।

अखिलेश और असीत राई दोनों ही अपने-अपने समाज के भीतर गहरे तक धंसी धार्मिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को उजागर करते हैं, लेकिन उनके दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति के केंद्र अलग हैं। अखिलेश अधिक राजनीतिक और आलोचनात्मक दृष्टि से धर्म-संस्कृति की सत्ता संरचना को चुनौती देते हैं। वहीं असीत राई अपने समुदायों की सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक संघर्ष को अधिक आत्मीय और मानवीय दृष्टि से चित्रित करते हैं। दोनों कथाकार अपने समय और समाज की गहरी पड़ताल करते हैं और साहित्य को सामाजिक विमर्श का सशक्त माध्यम बनाते हैं।

मनोज रूपरा एवं हायमन दास राई 'किरात'

21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में मनोज रूपरा ने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण कार्य किए । इस अवधि में उनकी प्रमुख कहानियों में 'टॉवर ऑफ लाइसेंस' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह कहानी अपने समय की विभिन्न विडंबनाओ को गहराई से रेखांकित करती है। इसके अलावा उनका कहानी संग्रह 'अनुभूति' भी इस दशक में प्रकाशित हुआ, उनमें तीन कहानियों की त्रय शामिल है। यह संग्रह समकालीन कथा साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मनोज रुपाड़ा की कहानी समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं को गहराई से प्रस्तुत करती है जो पाठकों को समाज की जटिलताओं और परिवर्तनशीलता पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। मनोज रुपाड़ा की कहानी 'टॉवर ऑफ साइसेंस' समकालीन भारतीय समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक संरचना

की जटिलताओं को याद करती है। यह कहानी पारसी समुदाय और उसकी विशिष्ट परंपराओं पर केंद्रित है जो आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाने का संघर्ष कर रहा है। पारसी धर्म की परंपरा के अनुसार कहानी में पारसी समुदाय की धार्मिक मान्यता और उसकी अंतिम संस्कार पद्धति (डखमा प्रणाली) का जिक्र मिलता है, जहां मृतकों को खुले में रखकर गिद्धों द्वारा खाए जाने दिया जाता है। यह धार्मिक परंपरा पर्यावरण और आध्यात्मिक विश्वासों से जुड़ी है ।आधुनिक शहरीकरण और प्रकृति में बदलाव के कारण पारसी समुदाय की यह परंपरा संकट में पड़ जाती है। कहानी इस बात को दर्शाती है कि कैसे धार्मिक आस्थाएं समय के साथ परिवर्तित होती है और उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है । जब पारसी समुदाय के बुजुर्ग अपनी परंपरा को बचाने की बात करते हैं तो उनके संवादों में धार्मिक आस्था की गहराई दिखाई देती है।" गिद्धों का विलुप्त होना सिर्फ एक प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि हमारी धार्मिक परंपरा का अंत है।"[10] यह संवाद पारसी धर्म के संकट को उजागर करता है।

कहानी में विभिन्न संवादों के माध्यम से पारसी समुदाय की जीवन शैली रीति रिवाज और उनकी सांस्कृतिक विरासत को चित्रित किया गया है: "हमारी पीढ़ी ही आखरी है जो अवेस्ता पढ़ती है, अगली पीढ़ी इसे सिर्फ इतिहास की किताबों में दिखेगी।" यह संवाद बताता है कि पारसी संस्कृति धीरे-धीरे समाप्त हो रही है,यह एक प्रकार का संस्कृत संकट है । अतः यह कहानी पाठकों को संस्कृति के अस्तित्व पर सोचने के लिए लिए मजबूर कर देती है।

मनोज रुपाड़ा की कहानी सांस्कृतिक अस्मिता, धार्मिक संवेदना, सामाजिक विस्थापन, मानवीय भावनाएं और आधुनिकता परंपरा के विस्तार जैसे विषयों को गहराई से प्रस्तुत करती है उनकी कहानियों की संवेदना मानवीय अनुभवों के सूक्ष्म पहलुओं को स्पर्श करती है और पाठकों को आत्म विश्लेषण के लिए प्रेरित करती है। मनोज रुपाड़ा की कहानी 'अनुभूति' एक अनाथ बालक की कहानी है, जो एक ईसाई मिशनरी संस्था में रहता है मिशनरी संस्था उसे आवश्यक सुविधाएं देती है लेकिन उसकी आंतरिक भावात्मक आवश्यकता पूरी नहीं कर पाती । मिशनरी संस्था का प्रमुख बालक से कहता है: "यहां तुम्हें सब कुछ मिलेगा शिक्षा, भोजन, आश्रय, सुरक्षा।"[11] बालक मन ही मन कहता है :"पर मुझे मां की गोद ,उसकी गंध, उसका स्नेह चाहिए।"[12] बालक जब गाय के थन से दूध पीता है, तो उसे एक आध्यात्मिक अनुभव होती है, जो किसी धार्मिक अनुष्ठान की तरह महसूस होती है। बालक हैरानी से यह तो किसी चमत्कार की तरह है..... मां जैसी अनुभूति!"[13]

इस प्रकार मनोज रुपाड़ा की कहानियों में आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष प्रमुख रूप से दिखाई देता है वह उन सामाजिक परिवर्तनों को रेखांकित करते हैं, जिनमें सांस्कृतिक पहचान संकट में पड़ जाती है।

हायमन दास राई 'किरात' एक भारतीय नेपाली साहित्यकार और समाजसेवी थे। उन्होंने नेपाली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपने लेखन के माध्यम से समाज के मध्य वर्गीय जीवन शैली को उकेरा। उन्हें 2008 में 'केही नमिलेका रेखाहरू' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हाइमन दास राई 'किरात' की कहानी 'हाइकिंग' उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाओं को दर्शाने वाली महत्वपूर्ण रचना है। इस कहानी में किरात समुदाय की परंपराओं, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। किरात समुदाय प्रकृति पूजक रहा है, और इस कहानी में पर्वतों नदियों और जंगलों के

प्रति उनका आध्यात्मिक लगाओ दिखाया गया है। कहानी में पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं और बदलते समय के बीच संघर्ष को दर्शाया गया है। आधुनिक पीढ़ी और पुराने पीढ़ी के धार्मिक दृष्टिकोण में टकराव को भी रेखांकित किया गया है। किरात परंपरा में पूर्वजों की आत्मा की पूजा का महत्व है, जिसे कहानी में गहरी भावात्मक रूप में चित्रित किया गया है। कहानी का मुख्य पात्र अथवा नायक दिनेश है, जो एक शिक्षित युवा एवं आधुनिक सोच रखने वाला है, लेकिन अपने सांस्कृतिक जड़ों को भी समझना चाहता है। हाइकिंग के दौरान वह अपने पूर्वजों की परंपराओं और मान्यताओं को समझने की कोशिश करता है,वह कहता है:- "बाजेहरूले सधैं हामीलाई सिकाउनु भएको थियो कि पूर्वजहरूको सम्मान नगर्ने जाति कहिल्यै उठ्न सक्दैन।"[14] (दादा हमेशा कहते थे कि जो अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करता, वह कभी ऊपर नहीं उठ सकता।) कहानी में एक बुजुर्ग युवा पीढ़ी को बताता है: "यो वनमा हाम्रो पुर्खाले कहिल्यै बिरानो मान्नुभएन, यहाँका हरेक रुख हामीलाई कथा सुनाउँछन्।"[15] (इस जंगल को हमारे पूर्वजों ने कभी पराया नहीं माना, यहाँ के हर पेड़ हमें कहानियाँ सुनाते हैं।) इस प्रकार हैकिंग कहानी कीरात समुदाय की धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक धरोहर को गहराई से उभरता है यह पाठकों को न केवल किरात परंपरा से परिचित कराता है बल्कि उनके जीवन दर्शन को भी उजागर करता है।

मनोज रूपड़ा और हाईमन्दास राई दोनों अपने समय और समाज के भीतर छुपी धार्मिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को बड़ी संवेदनशीलता से उजागर करते हैं। मनोज रूपड़ा धर्म और संस्कृति को अस्तित्व के संकट और आधुनिक विघटन के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। हाईमन्दास राई धर्म और संस्कृति को सामाजिक पहचान, जातीय अस्मिता और मानवीय जद्दोजहद के रूप में चित्रित करते हैं। दोनों कथाकारों की दृष्टि में गहरी मानवीय करुणा और अपने समय की सच्चाई से आँख मिलाने का साहस है, जो उन्हें अपने साहित्यिक यथार्थ का प्रामाणिक प्रतिनिधि बनाता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ एवं कृष्ण धाराबासी:

मनीषा कुलश्रेष्ठ समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में एक है, उनकी कहानी सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाओं को गहराई से व्यक्त करती है। 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में उनकी रचनाएं विशेष रूप से स्त्री की मानवीय गरिमा, सामाजिक विडंबनाओ और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के प्रभाव पर केंद्रित है । उनकी रचनाएं पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच के संघर्ष को उजागर करती है। जहां पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान की खोज में संलग्न रहते हैं। कहानियों में धार्मिक आस्थाओं के साथ-साथ समाज में व्याप्त पाखंडों की भी आलोचना की गई है, जिससे पाठक धार्मिकता के वास्तविक अर्थ पर विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी समाज में व्याप्त विडंबनाओ और कठोर सत्य को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है, जिससे पाठक समाज की वास्तविकताओं से रूबरू होते हैं। उनकी लेखनी में सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक आस्थाएं, और सामाजिक संरचनाओं का सजीव चित्रण मिलता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी संग्रह 'कुछ भी तो रूमानी नहीं' जिनमें कुल नौ कहानी शामिल है जो जीवन के कठोर यथार्थ से पाठकों को रूबरू कराती है। इन कहानियों में स्त्री पुरुष संबंधों सामाजिक विडंबनाओ और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण हुआ है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'मास्टरनी' समाज में एक महिला शिक्षिका के संघर्ष को चित्रित करती हैं। यह कहानी केवल एक स्त्री के व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं की भी गहरी अभिव्यक्ति मिलती है । सुषमा इस कहानी में एक नायिका है जो समाज में एक शिक्षिका होने के बावजूद भी धार्मिक रूढ़ियों से मुक्त नहीं हो पाती पारंपरिक सोच के अनुसार स्त्री को सहनशील त्यागमय और धर्म परायण माना जाता है और इसी धारणा के कारण वह अपने संघर्षों को सहन करने के लिए विवश होती है। कहानी में यह भी दर्शाया गया है कि कैसे धर्म का उपयोग सामाजिक भेदभाव को बनाए रखने के लिए किया जाता है। शिक्षण संस्थानों में भी धर्म के आधार पर भेदभाव झलकता है, जहां कुछ विचारधाराएं महिलाओं को सीमित भूमिकाओं में दिखती है। कहानी में यह भी दिखाया गया है कि कैसे समाज स्त्रियों से धार्मिकता और त्याग की अपेक्षा रखता है:" नारी का सबसे बड़ा धर्म है अपने परिवार को संभालना । शिक्षा दीक्षा तो ठीक है, लेकिन घर की जिम्मेदारी से बड़ी कोई जिम्मेदारी नहीं होती... तुम एक शिक्षिका हो, लेकिन पहले एक बहू, एक पत्नी और एक मां भी हो- धर्म यही कहता है।"[16] कुछ पात्रों के संवादों से यह झलकता है कि कैसे धर्म को शिक्षा से जोड़कर नैतिकता और अनुशासन को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है:-" आजकल के बच्चों में संस्कार नहीं रहे, धर्म से दूर होते जा रहे हैं, यही कारण है कि वे शिक्षकों का सम्मान भी नहीं करते।"[17]

इस प्रकार 'मास्टरनी' कहानी में व्याप्त धार्मिक सांस्कृतिक सोच को भी प्रतिबिंबित किया गया है। कहानी के संवाद पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि क्या स्त्रियों के लिए धर्म और संस्कृति की परिभाषा समय के साथ बदल रही है, या वह आज भी उन्हें रूढ़ियों में जकड़ी हुई है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी "कुछ भी तो रूमानी नहीं" आधुनिक समाज में बदलते रिश्ते, धार्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक परिवर्तनों की गहरी पड़ताल करती है। यह कहानी न केवल स्त्री- पुरुष संबंधों की जटिलताओं को उजागर करती है, बल्कि सामाजिक संरचना में धर्म और संस्कृति की भूमिका को भी दर्शाती है। कहानी में यह भी दिखाया गया है कि कैसे धार्मिक मान्यताएं प्रेम और वैवाहिक संबंधों के निर्णय को प्रभावित करती हैं। "तुम उससे प्यार कर सकती हो, लेकिन क्या तुम्हारे धर्म और उसके धर्म के बीच की दीवार इतनी कमजोर है कि वह गिर जाएगी ?"[18] धर्म के नाम पर स्त्रियों की स्वतंत्रता को सीमित करने की प्रवृत्ति इस कहानी में भी देखने को मिलती है।" तुम्हें यह तय करना होगा कि प्यार तुम्हारे लिए बड़ा है या तुम्हारा धर्म!" कहानी में यह भी सवाल उठाया है कि क्या समाज आधुनिक होते हुए भी अपने पुरानी जड़ों से बना रहेगा क्या प्रेम और स्वतंत्रता जैसी आधुनिक अवधारणाएं पारंपरिक सांस्कृतिक धारणाओं को चुनौती देगी?" क्या हम हमेशा इस सोच में बंधे रहेंगे, जिसमें हमारे पूर्वज थे?"[19]

इस प्रकार कुछ भी तो रूमानी नहीं कहानी धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदना का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है कहानी में धर्म केवल आस्था का विषय नहीं बल्कि सामाजिक संरचना को नियंत्रित करने वाला कारक भी है साथ ही या स्पष्ट करती है की संस्कृति केवल अतीत की परछाई नहीं, बल्कि यह निरंतर विकसित होते रहती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ और कृष्णधर अवस्थी दोनों कथाकार अपने समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को गहरी संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टि से व्यक्त करते हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ विशेषकर स्त्री चेतना और सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष को केन्द्र में रखती हैं। कृष्णधर अवस्थी जातीय संस्कृति, लोकविश्वास और सामाजिक बदलाव को सहजता से उभारते हैं। दोनों ही अपने साहित्य के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच फंसे मनुष्य की संवेदनाओं को गहराई से पकड़ते हैं और समकालीन कथा-साहित्य को नई दिशा प्रदान करते हैं।

मधु कांकरिया एवं उदय थुलुंग:

21वीं सदी के दूसरे दशक में मधु कांकरिया की कई महत्वपूर्ण कहानियां एवं उपन्यासे आई जो समकालीन जीवन के विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक मुद्दों को बड़ी गहराई से उजागर करती हैं। उनकी रचनाएं समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं, जिसमें धार्मिक कट्टरता और सांस्कृतिक संघर्ष भी प्रमुख है । मधु कांकरिया की कहानी 'चिड़िया ऐसे मरती है' समकालीन सामाजिक परिवेश में धर्म और संस्कृति के प्रभाव को गहराई से उकेरती है। यह कहानी केवल चिड़ियों के जीवन संघर्ष का प्रतीक नहीं है बल्कि मानवीय अस्तित्व स्वतंत्रता और समाज में व्याप्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक जटिलताओं की ओर भी संकेत करती हैं। कहानी के प्रमुख स्त्री पात्र कहती है: "भगवान ने सबको खुले आकाश में उड़ने के लिए बनाया, पर हमने धर्म के नाम पर हर किसी को पिंजरे में बंद कर दिया... कभी-कभी तो लगता है कि धर्म से बड़ा पिंजरा कोई नहीं, जो इंसान को देखने तक की आजादी नहीं देता ।"[20] डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी धर्म को सामाजिक न्याय के नजरिए से देखा। उन्होंने कहा:"धर्म वह होना चाहिए जो आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता को बढ़ावा दे, न कि शोषण और गुलामी को।" यह कथन धार्मिक प्रतिबंधों और उनके सामाजिक प्रभाव को इंगित करता है। वहीं दूसरी ओर यह कहानी विभिन्न सांस्कृतिक रूढ़ियों को भी दर्शाती है, जिसमें प्रमुख पात्र कहती है : "परंपराएं जब जीने नहीं देती तो क्या उन्हें ढोते रहना जरूरी है?... हमारी संस्कृति ने हमें उड़ाना सिखाया या सिर्फ सर झुकाना?"[21] इस प्रकार 'चिड़िया ऐसे जीती है' कहानी में गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श को प्रस्तुत किया है। इसके पात्र केवल नाम मात्र के नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से गहरे अर्थ को रखते हैं। यह प्रतीकात्मक पात्र हैं, जो स्वतंत्रता की आकांक्षा, स्त्री जीवन और धार्मिक सांस्कृतिक बंधनो के बीच संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है ।

उदय थुलुंग नेपाली साहित्य के एक प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने समाज के विविध पहलुओं को अपनी कहानियों में उजागर किया है । उनकी प्रमुख कहानी 'नया बाटो'(नया रास्ता) और 'परिवर्तन' जिनमें उन्होंने मानव जीवन के संघर्ष सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाया है । कहानी में पात्रों के माध्यम से धार्मिक आस्थाओं को दर्शाया गया है। यह दिखाया गया है कि किस प्रकार परंपरागत धार्मिक विश्वास नए युग की सोच से टकराते हैं। समाज में व्याप्त धार्मिक परंपराओं और रीति-रिवाज को कहानीकार ने गहराई से चित्रित किया है। 'नया बाटो' में नेपाली समाज की सांस्कृतिक विविधता और उसके बदलते स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। पारंपरिक और आधुनिक विचारों के टकराव को दिखाकर कहानीकार ने समाज में आ रहे परिवर्तनों को उजागर किया है। नेपाली लोक जीवन मान्यताएं और सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान कहानी में झलकता है। बूढा बुबा: "हाम्रा पौरखहरूले अपनाएको बाटो नै सही हो। नयाँ बाटो खोज्दैमा सबै ठीक हुन्छ भन्ने छैन। देवताको

आशीर्वाद बिना केही हुँदैन।"[22] युवा छोरो:"बुबा, समय फेरिएको छ। पुराना मान्यताहरूले हामीलाई अगाडि बढ्न दिँदैनन्। अब नयाँ सोच र कर्मको बाटो अपनाउनुपर्छ।"[23]

प्रस्तुत संवाद बूढ़ा बुबा(बाबा) और युवा छोड़ा(युवा लड़का) के बीच होता है, जिसमें बाबा परंपरा को अपनाने की बात करते हैं, तो युवा लड़का पुराने परंपरा के परित्याग की बात करते हैं समय के साथ बदलाव की बात करते हैं,नई परंपरा को अपनाने की बात करते हैं। उदय जी की दूसरी कहानी 'परिवर्तन 'में भी उन्होंने धार्मिक एवं सांस्कृतिक बदलाव को आधुनिक परिपेक्ष में दर्शाया है, तथा रूढ़ियों धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों पर उन्होंने कई नए परिवर्तनों को दिखाने का प्रयास किया है। "हाम्रो पुर्खाहरूले चलाएको परम्परा हामीले तोड्न मिल्छ र?"[24] (क्या हम अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित परंपराओं को तोड़ सकते हैं?)

"धर्म भनेकै आस्था हो, परम्परा भनेकै हाम्रो पहिचान!" (धर्म आस्था है, परंपरा हमारी पहचान है!) "भगवानलाई मान्ने हो भने उहाँका सबै नियम पनि मान्नुपर्छ!"[25] (यदि हम ईश्वर को मानते हैं, तो उनकी सभी परंपराओं को भी मानना होगा!)

उन्होंने आगे यह भी बताने का प्रयास किया है कि हमारी भाषा परिधान और त्योहार ही हमारी पहचान है ।हमें नई चीज सीखनी चाहिए लेकिन अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए । संस्कृत वह चीज है जो समय के साथ बदलता है इस तरह उन्होंने इस कहानी में सांस्कृतिक विविधता को विभिन्न रूपों में दर्शाया है जहां समय के साथ बदलाव आवश्यक है ।

"पुरानो संस्कृति जोगाउनु पर्छ, नत्र हामी को हौं भनेर कसरी चिनिन्छ?"[26]

(हमें अपनी पुरानी संस्कृति बचानी चाहिए, नहीं तो हम अपनी पहचान कैसे बनाएंगे?)

"नयाँ पुस्ता त पहिला जस्तो संस्कार मान्दैन, के गर्ने?"

(नई पीढ़ी पहले की तरह संस्कार नहीं मानती, अब क्या किया जाए?)

"संस्कृति परिवर्तन भनेकै हाम्रो पहिचान मेटाउने कुरा त होइन नि!"[27]

(संस्कृति में बदलाव का मतलब यह नहीं कि हमारी पहचान मिट जाएगी!)

इस प्रकार परिवर्तन कहानी के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदना को प्रभावी ढंग से उभर गया है। धार्मिक दृष्टि से यह संवाद परंपरा और आध्यात्मिक सोच के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता को दर्शाते हैं, वहीं सांस्कृतिक दृष्टि से यह संवाद समाज में परिवर्तन और पहचान के सवालों को उठाते हैं। संवाद योजना इस कहानी को अधिक प्रभावशाली बनती है।

मधु कांकरिया और उदय थुलुंग दोनों ही अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ, धार्मिक असंगतियों और सांस्कृतिक विघटन को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं, किन्तु उनकी दृष्टि और विषयवस्तु में भिन्नताएँ हैं: मधु कांकरिया का फोकस विशेषकर शहरी समाज, स्त्री अस्मिता और आधुनिक सांस्कृतिक संकट पर है। उदय थुलुंग जातीय जीवन, प्रवासी संघर्ष और सांस्कृतिक पहचान की जद्दोजहद को उभारते हैं। दोनों

कथाकार अपने समाजों के भीतर चल रहे सूक्ष्म परिवर्तन और संघर्षों के सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं, जो उन्हें समकालीन कथा-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिलाते हैं।

निष्कर्ष :

इस प्रकार इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक की हिंदी और नेपाली कहानियाँ समाज के भीतर व्याप्त धार्मिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को गहराई से उजागर करती हैं। ये कहानियाँ न केवल यथार्थ को चित्रित करती हैं, बल्कि सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं को भी साहित्यिक स्वर देती हैं। हिंदी कहानियों में धार्मिक संवेदना बहुधा साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता और समाज में बढ़ते ध्रुवीकरण के संदर्भ में सामने आती है। समकालीन लेखक धार्मिक आस्थाओं के नाम पर हो रहे अन्याय, विभाजन और हिंसा को उजागर करते हैं। इसके साथ ही वे लोकपरंपरा, धार्मिक सहिष्णुता और विविधता में एकता के मूल्यों को भी सामने रखते हैं। नेपाली कहानियों में धार्मिकता अधिकतर जातीय अस्मिता, सामाजिक श्रेणियों और परंपरागत मान्यताओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। नेपाली कथाकार समाज में व्याप्त जातीय-धार्मिक भेदभाव, सामाजिक कुरीतियों और सांस्कृतिक टकराव को उजागर करते हैं। साथ ही वे सांस्कृतिक पुनराविष्कार और समावेशी पहचान की ओर संकेत करते हैं। सांस्कृतिक संवेदना दोनों भाषाओं की कहानियों में समान रूप से महत्वपूर्ण रही है। हिंदी कहानियों में यह ग्रामीण बनाम शहरी जीवन, आधुनिकता बनाम परंपरा, और सांस्कृतिक संक्रमण के रूप में आती है। वहीं नेपाली कहानियों में यह लोकसंस्कृति, भाषाई अस्मिता, प्रवास और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी पीड़ा के रूप में उभरती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

1. अखिलेश, अंधेरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 47.
2. वही, पृष्ठ 52.
3. वही, पृष्ठ 55.
4. वही, पृष्ठ 87.
5. वही, पृष्ठ 91.
6. वही, पृष्ठ 93.
7. अखिलेश ,शॉप ग्रस्त, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 33.
8. वही, पृष्ठ 36.
9. राय असित, नया क्षितिजको खोज, श्याम प्रकाशन,दार्जिलिंग, 2003,पृष्ठ 58 .
10. रुपाड़ा मनोज, टावर ऑफ़ साइलेंस, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2020 , पृष्ठ 24.
11. रुपाड़ा मनोज ,साज नासाज संग्रह, लोक भारती प्रकाशन, 2020, पृष्ठ 58.
12. वही, पृष्ठ 30.
13. वही ,पृष्ठ 33.
14. राय ,दास हाइमन,हाइकिंग, नवयुग पुस्तक मंदिर प्रकाशन, दार्जिलिंग, 2001, पृष्ठ 48.
15. 15.वही, पृष्ठ 52.

16. कुलश्रेष्ठ मनीषा, किरदार ,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 21.
17. वही, पृष्ठ 22 .
18. कुलश्रेष्ठ मनीषा, कुछ भी तो रूमानी नहीं, अंकित प्रकाशन, नई दिल्ली , 2008, पृष्ठ 88.
19. वही, पृष्ठ 93.
20. कांकरिया मधु, चिड़िया ऐसे मरती है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ 44.
21. वही, पृष्ठ 49.
22. थुलुंग उदय, बेहाद फुलेका मनका वैसाहरु,श्याम ब्रदर्स प्रकाशन, दार्जिलिंग, 2008,पृष्ठ 49.
23. वही, पृष्ठ 56.
24. थुलुंग उदय ,नया बाटो, श्याम ब्रदर्स प्रकाशन, दार्जिलिंग, 2010, पृष्ठ 14.
25. वही. पृष्ठ 18.
26. वही, पृष्ठ 22.
27. वही, पृष्ठ 23.